भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(8), अगस्त 2026, पृ. 826-835
DOI: 10.56042/ijtk.v25i8.22658

कोराकल: केरल के प्रवासी मछुआरों की सांस्कृतिक धरोहर

श्वेता के सी[क], जयलक्ष्मी के.जे[क,*] एवं श्रीकांत जी बी[ख]
[क]समुद्री विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय, [क]मत्स्य संसाधन प्रबंधन विभाग, केरल मत्स्य एवं महासागर अध्ययन विश्वविद्यालय, कोच्चि, केरल, 682 506, भारत
[ख]भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, ओल्ड गोवा, गोवा 403 402, भारत
[*]ई-मेल: jayalakshmi.kj@kufos.ac.in

प्राप्त 27 सितंबर 2025; संशोधित 13 जुलाई 2026; स्वीकृत 10 अगस्त 2026

कोराकल केरला में प्रवासी मछुआरों द्वारा एस्टुआराइन (नदमुख) और रिवरिन (नदीय) मत्स्य पालन के लिए उपयोग की जाने वाली एक पारंपरिक नाव (मत्स्य शिल्प) है। यह पत्र उत्तरी केरला के वलापट्टनम (VAL) और धर्मदम (DHA) नदमुखों में ऐसी अनूठी मछली पकड़ने वाली नौकाओं के उपयोग को पहली बार दस्तावेजीकृत करने और रिपोर्ट करने का प्रयास करता है। जनवरी 2021 से दिसंबर 2022 तक वलापट्टनम (VAL) और धर्मदम (DHA) नदमुख में काम करने वाले प्रवासी कोराकल मछुआरों के बीच एक खोजपूर्ण अध्ययन किया गया था। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नौकाओं के प्रकार, पकड़ी गई मछलियों की संरचना की खोज करना और गैरेट रैंकिंग पद्धति का उपयोग करके प्रवासी मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आकलन करना था। प्राथमिक डेटा 20 कोराकल मछुआरों से यादृच्छिक (रैंडमली) ढंग से एकत्र किया गया था, जो इस क्षेत्र में काम करने वाले कुल प्रवासी कोराकल मछुआरों का लगभग 90% प्रतिनिधित्व करते हैं। इन नौकाओं में पकड़ी जाने वाली प्रमुख प्रजातियां एट्रोप्लस सुरतेंसिस, सिलागो सिहामा, मिस्टस गुलियो, मुगिल सेफालस और एरियस एरियस हैं। दशकों पहले, केरला तट पर प्रवास करने के मुख्य कारण उनके मूल स्थान पर बेरोजगारी और प्रतिस्पर्धा थे। कार्यस्थल पर मुख्य बाधा कोराकल के संचालन में जोखिम और प्रतिस्पर्धा थी। मछुआरों ने केरला में प्रवास के साथ अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार हासिल किया। अध्ययन संसाधन संरक्षण, नियामक अनुपालन और मछुआरों की सुरक्षा के साथ पारंपरिक कोराकल मत्स्य पालन प्रथाओं को संतुलित करने की आवश्यकता पर भी जोर देता है।

मुख्य शब्द: पारंपरिक मत्स्य पालन, नदी मुख, प्रवासन, प्रबंधन उपाय, उत्तर केरल